समता हिन्दी
मासिक

वर्ष ४, अंक-८ "हिन्दी प्रेमियों की श्रेष्ठ पत्रिका" आगस्त - २०१०

गौरवनीय संपादक

डॉ. एस.एस. बाबु

संपादक

एस. चन्द्रशेखर

संयुक्त संपादक

एम. अनिलकुमार

कार्यालय

भारतीय समता हिन्दी प्रचार परिषद

सेंन्ट्रल आफीस, गुणदला, विजयवाडा-५२० ००४

फोन : ०८६६-२४५१६११

फैक्स : २४३९६९६

samatahindi@yahoo.com

सहयोग राशी

वार्षिक : १०० रुपये

विदेश में

एक अंक-ढाई यू.एस.डॉलर (US$2.5)

वार्षिक-पच्चीस यू.एस.डॉलर (US$25)

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी चन्द्रशेखर द्वारा सेंट्रल आफीस, गुणदला, विजयवाडा-५२००४ से प्रकाशित एवं शांति प्रिंटर्स और पब्लिषर्स गुणदला, विजयवाडा - ४ द्वारा मुद्रित

समता हिन्दी में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

समता हिन्दी के पाठकों और समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस पर हमारी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ

भारतीय संस्कृति को विश्व की प्राचीनतम् संस्कृति होने का गौरव प्राप्त है। इस संस्कृति में आध्यात्मिक चिन्तन को जितना ऊंचा और व्यापक स्थान मिला है उतना संसार की किसी भी दूसरी संस्कृति को नहीं मिला है। इसी कारण भारतीय संस्कृति को प्राचीनता होने के साथ-साथ महानतम् संस्कृति की प्रतिष्ठा भी उपलब्ध हैं। यहाँ धर्म को सर्व श्रेष्ठ माना गया हैं। अनेकता में एकता इसकी विशेषता हैं। धर्म राष्ट्र को एकता की सूत्र में बाँधता है और राष्ट्र धर्म की रक्षा करता है।

आज समय वक्षल रहा है लोगों का विचार धारायें भी बदल रही है ऐसी स्थिति में राष्ट्र के नायकों को भी बदलना स्वाभाविक हीं है। आज सेवा, स्वार्थ परक होगया है। कुरसी और राजकी सत्ता धर्म और राष्ट्र से ऊंचा होगया हैं। छन्निक स्वार्थ में धर्म और राष्ट्र को बलि चढ़ाया जारहा है। जिसके कारण राष्ट्र पर खतरा मड़रा रहा है। आप प्रति दिन समाचार पत्रों, टी.वी., मीडिया में देखते सुनते होंगे । कभी राम मन्दिर की विश्वसनीयता रामसेतु की ऐतिहासिकता तथा अमरनाथ व्यवस्था की सत्यता के नाम पर दूषित राजनीति का घृणित समाचार मिलता रहता है। यह सब आज के राजनीति में फैशन बन गया हैं। आज स्वतंत्रता के 61 वीं वर्ष गाँठ मनाने जारहें हैं मानव आज भी आवश्यक आवश्यकता रोटी कपडा मकान शिक्षा चिकित्सा सुरक्षा की पूर्ति नहीं कर पा रहा है, विकास के नाम पर विदेशी संस्कृति घर घर दस्तकदे रही हैं महँगाहि मानव को कमर तोड़ रही है किसान आत्म हत्या कर रहा है। युवा पीढी दिग्भ्रमित हो कर पलायन कर रहें हैं। आतंकवाद अलगावाद भ्रष्टाचार का तान्डव नृत्य देखने को मिल रहा है। हाल की धरना जिस परिस्थिति में काँग्रेस डॉ. मनमोहन सिंह कारकार को गिराने का दुष्चक्र नाटक किया गया वृद्दि जीवी वर्ग को सोचने के लिए विवश कर दिया है। वोट के बदले नोट संसद भवन में पैसे का खेल इतिहास का काला अध्याय हम सब लोगों ने देखा। क्या यह नयी संस्कृति और नयी परम्परा को जन्म देरहा है? क्या यह लोक तंत्र का मजाक नही हैं? आज पुन: देश के समझ मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता महसूस होने लगी है जिन उद्देश्यों और आकांक्षाओं को लेकर हमारे सपूतों ने राष्ट्र को स्वतंत्रता दी आज उन्हीं के सपूतो ने उसे मिट्टी में मिला दिया।

तो आइए समता हिन्दी परिवार राष्ट्र धर्म को आध्यात्मिक मूल्यों से सिंचित करने हेतु आपके साथ है। आज पुन: आवश्यकता है राष्ट्र धर्म को धर्म और राजनीति की राज सत्ता और विचार धारा से श्रेष्ठ मान जाये।

सर्वे भवन्तु सुखीन: संदे सन्तु निरामय:

वसुधैव कुटुम्बकम के आदर्श को जन जन तक पहुँचाने तथा इस कार्य को सहजता सरलता एवं कुशलता लाने हेतु समता हिन्दी मासिक पत्रिका आपकी सेवा मे समर्पित है।

इसी शुभ मंगल कामनाओं के साथ...

हम है आपके
समता हिन्दी परिवार

संपादक

(एस.चन्द्र शेखर)

परीक्षा विवरण

⌘ राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा ⌘

समता हिन्दी प्रचार विभाग द्वारा संचालित राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा कार्यक्रम जीवनोपयोगी एवं अत्यन्त लाभदायक है। इस परिक्षा में निम्न कोटि के लोग भाग ले सकते है और उससे लाभान्वित हो सकते है।

१. कक्षा पाँचवी से दसवी तक अध्ययनरत सभी छात्र राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा में भाग ले सकते हैं।

२. राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा में सम्मिलित सभी प्रतिभागियों व अभ्यर्थियों को विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया जायेगा।

३. स्कूल-स्तर पर प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले परिक्षार्थी को विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया जायेगा।

४. प्रतिवर्ष जनवरी महीने में राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा आयोजित की जाती है।

५. हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी प्रत्येक प्रतिभागी छात्र को आधार प्रदान कर उसके विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा में सम्मिलित विद्यार्थी मुख्य रुप से हिन्दी में अपनी प्रतिभा का संबर्द्धन कर सकते है।

परीक्षा का नाम	:	**राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा**
परीक्षा	:	**जनवरी २०११**
परीक्षा समय	:	**९-०० से १०-००**
पाठ्यक्रम	:	**कक्षा की हिन्दी पुस्तक**
परीक्षा फीस	:	**४०/- रुपये मात्र**
परीक्षा केन्द्र	:	**हॉल टिकट में निर्देशित**

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क

परीक्षा सचिव,

समता हिन्दी प्रचार विभाग, गुणदला, विजयवाडा-५२० ००४

0866-2451611, 9848352011, 9885645639

मुफ्त में किताबों कैसे प्राप्त करें...

आप अपने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा में बिठाना चाहते हैं तो अपने स्कूल के प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थि से चालीस रुपये वसूल करके कुल १०० विद्यार्थि के लिए आप पाँच सौ रुपये लेकर बाकी तीन हजार पाँच सौ रुपये समता हिन्दी प्रचार विभाग विजयवाडा के नाम पर डि.डि. पहुँचते ही आपके नाम पर किताबें पहुँचा दी जाएगी। या परीक्षा शुल्क की राशि आन्ध्रा बैंक **online A/c** में **deposit** कर सकते हैं।

डि.डि. के पीछे प्रत्येक हिन्दी टीचर अपना पूरा पता वा स्कूल का नाम और कक्षा सहित **(Nominal Roll List)** के साथ प्रधान कार्यालय समता हिन्दी प्रचार विभाग, विजयवाडा-५२० ००४ के नाम पोस्ट करना है।

राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा का निर्वाहण :

NHT Exam केलिए अपने स्कूल में ही परीक्षा केन्द्र दिया जाएगा। परीक्षा के दिन हमारी संस्था के तरफ से एक ..... आकर परीक्षा का संचालन करते है। **NHT** परीक्षा समाप्त होने के बाद **"SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG, GUNADALA, VIJAYAWADA - 520 004 : Ph : 2451611,** के नाम ... भेजना चाहिए।

NHT MODEL PAPER

सातवी कक्षा से दसवी कक्षा तक राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा के प्रश्न पत्र सौ अंको का पेष होगा। सारे प्रश्न **MULTIPLE CHOICE QUESTIONS** में होंगे। **OMR (Optical Mark recognition)** में मार्क करना है। उदाहरण के लिए सातवी और दसवी कक्षा के कुछ प्रश्न दिये जाते है... उदाहरण :

❶ ❷ ● ❹

राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा-२०११

(National Hindi Test - 2011)

KARNATAKA, TAMILNADU, KERALA & MAHARASHTRA

कर्णाटका, तमिलनाडु, केरला और महाराष्ट्रा के सभी परीक्षार्थियों के लिए सौ अंक में निर्देशित प्रश्न पत्र दिया जाएगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग–HINDI SAHITYA SAMMELAN

Send 5 Students and get Attractive Gift

It's our duty to honour the teacher

प्रथमा S.S.C.
PRATHAMA
Eligible for Central & Sate Govt. Jobs
ELIGIBILITY :
Those who completed 14 years

उत्तमा साहित्य रत्ना (Hindi M.A.)
UTTAMA SAHITYA RATNA
Eligible for Jr.Lecturers
ELIGIBILITY : Intermediate or Madhyama Visharada or Equalent Degree

मध्यमा विशारद Hindi B.A.
MADHYAMA VISHARAD
Eligible for L.P.Set & D.S.C.
ELIGIBILITY: S.S.C. Pass or Prathama Pass, Equal Degree

For Further Information
098483 52011
0866 - 2451611

आत्मविश्वास एक 'अचूक अस्त्र' है

जान डीवी ने कहा है कि "Plants are developed by cultivation and Men by Education". (पौधों में विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है।) शिक्षा एक ऐसे पड़ाव अथवा (Plateform) का नाम है, जहां से व्यक्ति किसी भी दिशा में जा सकता है एवं अपना लक्ष्य निर्धारित कर सकता है। इसके लिए आत्मविश्वास (confidence) की बहुत सख्त जरूरत महूसस की गयी है। जब आत्मविश्वास डगमगाता है, तब ऐसा प्रतीत होने लगता है कि हमें कुछ भी नहीं आता। हम स्वयं को दूसरों से कमतर समझने लगते हैं। ऐसे में हमारे चारों ओर नकारात्मक विचारों का एक ऐसा भँवर बन जाता है कि हम उसमें उलझ उलझ कर रह जाते हैं। ऐसे में जिस काम को बड़ी आसानी से पूरा किया जा सकता है, वह भी जटिल लगने लगता है। सच तो यह है कि सफलता एवं असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू होते है। असफलता का यह मतलब बिल्कुल नहीं कि आप लगातार असफल ही होंगे। लोग कुछ कहते हैं तो कहने दीजिये। कान उनकी बातें सुनने में नहीं, बल्कि ध्यान और उत्साह बरकरार रखकर फिर से कोशिश करने में लगायें।

इस बात को याद रखिये कि काम चाहे अच्छा करें या बुरा, कुछ तो लोग कहेंगे ही। यदि आपने मान लिया है कि आपको इन बातों से उठकर कार्य करना है, तो कोई शक नहीं कि आपका (confidence) आत्मविश्वास चरम सीमा पर न हो। इस दुनिया में आम लोग क्या, महापुरुषों तक को शुरुआत में अपने विचार व कार्यों के लिये आलोचनायें झेलनी पड़ी। यदि वे लोगों की बातों से घबड़ा जाते, तो अपने किये गये कार्य के लिए इतिहास में अमर नहीं होते। दरअसल बेवजह की आलोचनाओं से उनका आत्मविश्वास जरा भी नहीं डगमगाया। फिर एक दिन ऐसा भी आया, जब वे आगे और लोग उनके पीछे पीछे चल रहे थे, जैसे कि महात्मा गाँधी एवं स्वामी विवेकानन्द जिन्होंने 32 वर्ष की अल्पायु में ऐसे महान कार्य कर डाले तथा भारतवर्ष की संस्कृति एवं सभ्यता को पूरे विश्व में फैला दिया, उनके द्वारा किये गये कार्यों को कोई 3200 वर्षों में भी पूरा नहीं कर सकता ।

अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि व्यक्ति यदि आत्मविश्वास रूपी अस्त्र का प्रयोग पूरी निष्ठा एवं जिम्मेदारी के साथ करता है, तो उसे कामयाबी अवश्य मिलती है। यदि कोई भी व्यक्ति चाहे किसी भी क्षेत्र से जुड़ा है, वह अपना कार्य जिम्मेदारी एवं वफादारी के साथ कर रहा है, तो वह निश्चित रूप से देश और समाज की सेवा कर रहा है। वह अपना लक्ष्य कभी न कभी अवश्य प्राप्त करेगा। ऐसा कहा भी गया है।

कदम चूल लेती है स्वयं आ के मंजिल।
मुसाफिर अगर अपनी हिम्मत न हारे ।

★★★

You Imagine... We Deliver....

You Imagine... We Deliver....

Sri Lakshmi Enterprises

WHOLESALE DISTRIBUTORS

ALL KINDS GIFT ARTICLES & NOVELTIES

Aishwarya Apartments, Masjid Street,
Marutinagar, VIJAYAWADA-4.

Ph : 0866-2451611, Cell : 94400 33910

WE PRINT YOUR LOGO & NAME FOR BULK ORDERS

FOR PRODUCT LIST & PRICE LIST

visit our website : www.srilakshmiwebnode.com

देश भक्ति गीत

साथी ... हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जायेगा
मिलकर बोझ उठाना
हम मेहनत वालों ने जब भी मिलकर कदम बढ़ाया
सागर से रास्ता छोड़ा, पर्वत ने शीश झुकाया
फौलादी हैं सीने अपने फौलादी हैं बाहें
हम चाहें तो पैदा कर दें चट्टानों में राहें
साथी हाथ बढ़ाना
मेहनत अपने लेख की रेखा मेहनत से क्या करना
कल गैरों की खातिर की अब अपनी खातिर मरन।

वर्तन का शुद्ध प्रयोग

प्रश्न : वर्तनी सम्बन्धी होने वाली त्रुटियों का उल्लेख कीजिए। उनके शुद्धिकरण पर विचार कीजिये. उनके शुद्ध रूप बताइये और बताइये कि इस समस्या का समाधान किस प्रकार किया जा सकता है।

प्रश्न : वर्तनी की शुद्धता के लिये कौन कौन से तत्व अपेक्षित है। उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

प्रश्न : वर्तनी की अशुद्धता के कौन से कारण है और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है?

प्रश्न : शुद्ध भाषा की संरचना में वर्तनी की उपयोगिता पर विचार करते हुए उसके मूल तत्वों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर : देवनागरी लिपि की श्रेष्ठता -

हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी लिपि संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं पूर्ण लिपि है। इसकी विशेषता यह है कि इसकी वर्णमाला ध्वनि नियमों के आधार पर निर्मित है। इसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। कोई वर्ण अनुच्चारित नहीं रहता है तथा हिज्जे (Spelling) याद करने का झंझट नहीं है ।

फिर भी इसमें वर्तनी की त्रुटियाँ प्रायः हो जाती है। इसके कई कारण है, जैसे, उच्चारण की अशुद्धि, अपूर्ण ज्ञान, विदेशी भाषाओं का प्रभाव तथा वर्तनी की एकरूपता का प्रभाव यानी वर्तनी की त्रुटि को गम्भीरतापूर्वक न लेना। अंग्रेजी में यदि Boy की जगह Woy लिख दिया जाएतो उस ओर सबका ध्यान जाएगा और लोग लेखक की खिल्ली तक उडाएँगे, परन्तु हिन्दी में बालक के स्थान पर बाल्क लिखा हुआ देखकर लोग केवल यह कहकर बात टाल देंगे कि ''सब चलता है''।

वर्तनी सम्बन्धी समस्याएँ : हिन्दी में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों की समस्या काफी व्यापक है। यह समस्याएँ विभिन्न रूपों में हमारे सामने आती है, यथा

1. **तथ्सम शब्दों की वर्तनी :** कुछ लोगों का मत है कि संस्कृत के शब्दों को तद्भव रूपों में भी ग्रहण किया जाए, किन्तु अब अधिकांश विद्वान यह मान चुके है कि संस्कृत शब्दों के तत्सम रूप ही अपनाए जाएँ। वर्तनी की एकरूपता तभी स्थापित हो सकती है। इस सन्दर्भ में वर्ण, स्वर, प्रत्यय, लिंग, सन्धि सम्बन्धी अशुद्धियाँ प्रायः देखने को मिलती है, यथा -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
व्यवहारिक	व्यावहारिक
अनुग्रहीत	अनुगृहीत
अर्थात	अर्थात्
जगत	जगत्

भाववाचक संज्ञा सम्बन्धी अशुद्धियां : संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय में आई, पन, हट, वट, पा, पा, आस, तथा त्व शब्दांश जोड़ कर भाववाचक संज्ञाएँ बनाई जाती हैं। नीचे लिखे उदाहरणों से कतिपय प्रचलित भाववाचक संज्ञायों के शुद्ध रूप समझे जा सकते हैं।

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
आरोपता	आरोप
कंगलता	कंगाली
आलस्यता	आलस्य
दुष्टताई	दुष्टता
सज्ञनपन	सज्ञन्ता
अज्ञानता	अज्ञान
साफल्यता	साफल्य
सौभाग्यता	सौभाग्य
ऐक्यता	ऐक्य

संज्ञा की लिंग सम्बन्धी असुद्धियाँ : संज्ञाओं के लिंग सम्बन्धों प्रयोग में प्रायः भूल हो जाया करती है। इसका कारण यह है कि हिन्दी में लिंग निर्णय एक कठिन कार्य है क्योंकि इसमें व्याकरण से पूर्ण सहायता प्राप्त नहीं होती है। संज्ञाओं के लिंग का निर्णय व्यवहार के अनुसार जाना जा सकता है, यथा-

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
दही खट्टी है ।	दही खट्टा है ।
बूरा रखी है।	बूरा रखा है ।
मेरी नमस्ते स्वीकार करो।	मेरा नमस्ते स्वीकार करो।
मेरा कलम ले आओ।	मेरी कलम ले आओ।
मेरा आत्मा को दुःख हुआ।	मेरी आत्मा को दुःख हुआ।
उसकी बातों की कोई ओर नहीं है।	उसकी बातों का कोई ओर नहीं है।
बालकों की हठ प्रसिद्ध है।	बालकों का हठ प्रसिद्ध है।

संज्ञा की वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ : कुछ शब्द ऐसे हैं जो केवल बहुवचन ही प्रयुक्त होते है, वे एकवचन में प्रयुक्त नहीं होते है, यथा प्राण, हस्ताक्षर, होश, दर्शन आदि ।

ध्याक्तिवाचक संज्ञा का रूप परिवर्तन : व्यक्तिवाचक संज्ञा में कोई विकार नही हो सकता। इस कारण विभक्ति के साथ उसके रूप में किसी प्रकार का परिवर्तना नहीं करना चाहिए। यथा -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
मैं इटावे जा रहा हूँ।	मैं इटावा जा रहा हूँ।
कलकत्ते के रसगुल्ला प्रसिद्ध है।	कलकत्ता के रसगुल्ले प्रसिद्ध है।
पूने में मौसम्मी अच्छी होती है।	पूना की मौसम्मी अच्छी होती है।
राजपूताने ने बड़ेबड़े वीरों को जन्म दिया है ।	राजपूताना ने बड़ेबड़े वीरों को जन्म दिया है।

य श्रुति सम्बन्धी अशुद्धियाँ : 'य' श्रुति की समस्या संज्ञा, विशेषण और पदों से विशेष रूप से सम्बन्धित है। जहाँ तक क्रिया पदों का सम्बन्ध है सामान्य भूत एक वचन में यदि 'या' है अथवा 'आ' स्त्रीलिंग बनाने के लिये क्रमशः 'ई' प्रयुक्त होना चाहिए। और 'इ' (ह्रस्व तथा दीर्घ) प्रत्ययाति संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के लिए 'यों' का प्रयोग करना चाहिए। यथा मुनि का मुनियों, नदी का नदियों, कली का कलियों आदि। विशेषण शब्दों को स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'ई' का प्रयोग करना चाहिए, यथा -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
आयेगा	आएगा
सुनिये	सुनिए
चाहिये	चाहिए
पत्तिओं	पत्तियों
बड़ायी	बड़ाई
मोटायी	मोटाई

अनुस्वार, चन्द्र बिन्दु और परसवर्ण की समस्याः इनका विशेष सम्बन्ध संस्कृत भाषा से है अतएव तत्सम शब्दों की भाँति संस्कृत में प्रयुक्त रूप ही ग्रहण किए जाने चाहिए। परन्तु इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। वे पंचमाक्षर और चन्द्र बिन्दु के स्थान पर अनुस्वार द्वारा ही काम चला लेने के पक्ष में हैं। यथा -

गंगा-गङ्गा, दंड-दण्ड, अंक-अङ्क, चाँद-चांद, आदि दोनों ही रूप प्रचलित हैं। दोनों ही शुद्ध मान लिए गए हैं।

विदेशी ध्वनियों की समस्या : हिन्दी में विदेशी शब्दों में समाहार के फल स्वरूप विदेशी ध्वनियों के लेखन की समस्या काफी महत्वपूर्ण हो गई है। तत्सम शब्दों की भाँति अन्य भाषाओं अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि शब्दों को इन भाषाओं में प्रयुक्त रूप में ही अपनाया जाना चाहिए। अंग्रेज़ी शब्दों की उच्चारण शुद्धि के लिये अर्द्धचन्द्र का प्रयोग करना चाहिए। जैसे हॉस्पिटल, कॉलेज इत्यादि।

संयुक्ताक्षरी सम्बन्धी त्रुटियाँ : सन्धि के नियमों का सम्यक ज्ञान न होने के कारण संयुक्ताक्षर लिखते समय वर्तनी की त्रुटि प्रायः हो जाती है। हम यहाँ सन्धि के नियम न देकर केवल कतिपय प्रचलित शब्दों के शुद्धाशुद्ध रूप ही देते है। जिससे पाठक इस संदर्भ में होने वाली अशुद्धियों के प्रति सावधान हो सके, यथा -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
उपयुक्त	उपर्युक्त
निरोग	नीरोग
यशलाभ	यशोलाभ
अत्योक्ति	अत्युक्ति
दुरावस्था	दुरवस्था
भगवत्भक्ति	भगवन्भक्ति
सम्वाद	संवाद
सुसुप्ति	सुषुप्ति
एकत्रित	एकत्र
सन्मान	सम्मान
सन्मुख	सम्मुख
मतेक्य	मतैक्य
मान्यनीय	माननीय
सत्मार्ग	सन्मार्ग
शरदचन्द्र	शरच्चन्द्र
दृष्ट	द्रष्टव्य

उपसंहार : हिन्दी लेखन में वर्तनी की अशुद्धियाँ बहुत होती हैं। दुर्भाग्य यह है कि हम लोग इस ओर जागरूक नहीं है। इस दिशा में अग्रेजी के प्रेमियों से शिक्षा लेनी चाहिए और वर्तनी की त्रुटियों के सहन नहीं करना चाहिए ।

हिन्दी की वर्तनी समस्या का समाधान यही है कि छात्रों को व्याकरण का ज्ञान कराया जाए तथा लेखन का अभ्यास कराया जाए ।

★★★

व्याकरणिक विकास

भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास में जब हम रूप परिवर्तन का अध्ययन करते हैं तो ऐसा लगता है कि प्राचीन से अर्वाचीन तक आते आते सब कुछ ही बदल गया है आधुनिक भाषाओं ने मानो अपनी पूर्ववर्ती भाषाओं के व्याकरण से कुछ ग्रहण ही नहीं किया, सब कुछ त्याग दिया है, और जो कुछ है वही नया ही नया है, किन्तु वैज्ञानिक विशलेषण करने पर स्पष्ट हो जायेगा कि वस्तु स्थिति नितान्त ऐसी नहीं है।

: वचन :

वैदिक और संस्कृत के तीन वचनों के स्थान पर पालि में ही दो वचन रह गये थे - एकवचन और बहुवचन । वास्तव में वैदिक भाषा में भी द्विवचन की जगह बहुवचन मिलता है, जैसे सुरथा मित्रावरूणा, नरा आदि में, यहाँ तक कि द्वौ (द्विवचन) के स्थान पर द्वा (बहुवचन) रूप प्राप्त होता है। इससे जान पड़ता है कि लोक में द्विवचन का व्यवहार विकल्प रूप से चल रहा था। किन्तु, संस्कृत के वैयाकरणों ने नियमितता, एकरूपता और शास्त्रीयता के नाते द्विवचन के प्रयोग को अनिवार्य माना। उनका यह आग्रह साहित्यिक भाषा में तो माना गया, किन्तु बोलचाल की (व्यावहारिक) भाषा में धीरे धीरे द्विवचन का नितान्त लोप हो गया। तभी तो जनभाषा होने के नाते पालि में उसका प्रयोग नहीं हुआ। तब से जनभाषाओं में दो ही वचन रहे हैं और साहित्यिक भाषा में भी संस्कृत का अनुकरम नहीं किया गया, क्योंकि प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी क्रमशः जनभाषा ही से उठ कर साहित्यिक भाषाएँ बनी हैं।

प्राचीन और मध्यकालीन आर्यभाषा में प्रत्येक संज्ञा और विशेषण का अनेकवचनीय रूप बदल जाता था और शब्द के अंतिम वर्ण के अनुसार भिन्न होता था। हिन्दी ने इस प्रक्रिया को बहुत ही सरल कर दिया है। पुंल्लिंग आकारान्त संज्ञा के **आ** का **ए** करके बहुवचन बनाया जाता हैं। ऐसी संज्ञा के साथ कारक चिह्न लगाने से पहले जो विकृत या तिर्यक **ए** बनता है, उसकी जगह (तिर्यक) बहुवचन में **ओं** लगता हैं। शेष पुंल्लिंग संज्ञाओं के मूल बहुवचन अथवा तिर्यक एकवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता, तिर्यक बहुवचन में **ओं** ही जुड़ता है। स्त्रीलिंग शब्दों में इ-ईकारान्त के अन्त में **आँ** जोड़कर मूल बहुवचन तथा **ओं** जोड़कर तिर्यक बहुवचन बनाया जाता हैं। इससे पहले **ई** का ह्रस्व हो जाना हो और **य** श्रुति का आना, जैसे भाइयों और लड़कियों में, एक अलग प्रक्रिया है। **इया** वाली स्त्रीलिंग संज्ञाओं के **आ** का क्रमशः **आँ** और **ओं** हो जाता है और शेष स्त्रीलिंग नामों के अन्त में **एँ ओं** जुड़ते हैं। उदाहरण -

हिन्दी : उदभव, विकास और रूप

	पुंल्लिंग		स्त्रीलिंग
	अकारान्त	अन्य	इ-ईकारान्त इया अन्य
मूल एकवः	लड़का	पत्तथर, मुनि	गति लड़की
			बात, माला
		हिन्दू	चिड़िया बहू
मूल बहुव	लड़के	पत्थर, मुनि,	गतियाँ लड़कियाँ,
			बातें, मालाएँ
		हिन्दू	चिड़ियाँ बहुएँ
तिर्यक एकव	लड़के	पत्थर, मुनि	गति, लड़की,
			बात, माला
		हिन्दू	चिड़िया बहू
तिर्यक बहुव	लड़कों	पत्थरों, मुनियों	गतियों लड़कियों,
			बातों, मालाओं
		हिन्दुओं	चिड़ियों बहुओं

संस्कृत के आकारान्त पुंल्लिंग शब्द - राजा, पिता, जामाता, नेता आदि तथा सम्बन्धवाचक दादा, नाना, काका आदि, मूल बहुवचन और तिर्यक एकवचन में अपरिवर्तित रहते हैं। तिर्यक बहुवचन में ओं जुड़ता हैं ।

विशेषणों के सम्बन्ध में देखिए अगला पृष्ठ ।

व्युत्पत्ति - ऊपर मूलरूप एकवचन में पत्थर और बात व्यंजनांत है, लड़का और माला आकारान्ता, मुनि और गति इकारान्त, चिड़िया इया में, लड़की ईकारान्त, हिन्दू और बहू ऊकारान्त हैं। इनकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है -

१. व्यंजनान्त विसर्ग लोप से, जैसे देवः देवः अन्त्य व्यंजन लोप से जैसे, फलम फल ।

२. आकारान्त अक : अअ आ (पुं)

३. ईकारान्त केवल तत्सम संस्कृत शब्द ।

४. उकारान्त केवल संस्कृत शब्द, जैसे प्रभु, सिन्धु ।

५. इया सं इका।

६. ईकारान्त सं ी या इका से ।

७. ऊ सं उक : ऊकः (पुं) सं ऊ (स्त्री)

तिर्यक एकवचन में बहुधा शून्य लगता है जो सं - म के लोप से प्राप्त हुआ है। आकारान्त पं का तिर्यक रूप ए होता है जो सभी परसर्गों से पहले प्रयुक्त होता है। यह सं के करण कारकीय ए एन अथवा सम्प्रदान आय ए से व्युत्पन्न हुआ है। अधिकरण एकवचन में भी - ए था, जैसे बालके (बालक में) - स्य (जैसे रामस्य) से हे और ए की संभावना कम है। केलां केलॉग ने ही यह सुझाव दिया है। उन्होंने स्मिन (जैसे तस्मिन) से हिं अहि, अइ ए स्वीकार किया है। किन्तु, यह भी बहुत ठीक नहीं है ।

बहुवचन ए के विषय में हार्नले और केलाग का विचार है कि तिर्यक एक वचन - ए ही कालान्तर में बहुवचन में प्रयुक्त होने लग गया। चटर्जी ने करण कारकीय एमि : से एहि एइ ए स्वीकार किया है। करण कारक में ए प्रत्यय था, उससे भी इसे व्युत्पन्न माना जा सकता है। सं सर्वनामों के बहुवनच में भी - ए था (जैसे सर्वे, ते, एते में)। स्प्रदान के :एभ्यः (जैसे बालकेभ्यः), करणं बहुव के - ऐ (जैसे बालकैः) अधिकरण के - एषु (जैसे देवेषु) से भी - ए के विकसित होने की संभावना है। स्त्रीलिंग बहुवचन - आँ और - एँ की व्युत्पत्ति सं आनि (प्रा आई) से सर्वमान्य है - आईं से आँ भी, एँ बी ।

बहुवचन - ओं संस्कृत - आनाम् (प्रां - आँआँव) से व्युत्पन्न हुआ है । इसमें कोई सन्देह नहीं हैं ।

★★★

मैं वह धनु हूँ

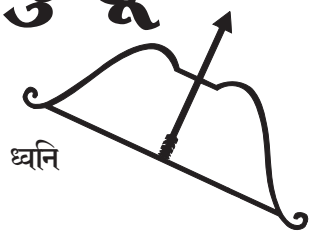

मैं वह धनु हूँ, जिसे साधने
में प्रत्यंचा टूट गयी है
स्खलित हुआ है बाण, यदपि ध्वनि
दिग्दिगन्त में फूट गयी हैं

प्रलय - स्वर है वह, या है बस
मेरी लज्जाजनक पराजय,
या कि सफलता, कौन कहेगा ।
क्या उस में है विधि का आशय ।

क्या मेरे कर्मों का संचय
मुझ को चिन्ता छूट गयी है
मैं बस जानूं, मैं धनु हूँ जिस
की प्रत्यंचा टूट गयी हैं ।

- अज्ञेय

फिटनेस दिल खोलकर हँसिए

हंसना और हंसाना एक दवा हैं। एक हताशा और बीमार शरीर के लिए हंसने जितनी प्रभावकारी कोई दवा नहीं है। यह बिना कष्ट का व्यायाम है, इसलिए खूब हंसिए, दिलखोलकर हंसिए और हंसाइए। खुशमिजाज इंसान अपने आसपास अच्छे माहौल का निर्माण करता है। उस व्यक्ति से सभी दोस्ती करना पसंद करते हैं। यहां तक कि दुखी व्यक्ति भी ऐसे व्यक्ति से मिलकर अपने आपको तनावमुक्त महसूस करता है। महफिल में उसका आ जाना ताजी हवा का झोंका सा महसूस होता है।

मुस्कुराना सीखीए : मुस्कुराना भी एक गुण हैं। आम जिंदगी में हंसते तो लगभग सभी है पर मुस्कुराते बहुत कम लोग हैं। मुस्कुराहट जीवन की एक आवश्यकता है जो काम हम प्रयत्न करके भी नहीं करा पाते है कभी कभी वह काम मात्र`क मुस्कुराहट से हो जाता है जब हमारे चेहरे पर मुस्कान होती है तो हमारी आवाज में भी मिठास होती है और किसी भी व्यापार के लिए यह सफलता का बड़ा राज हो सकता है। मुस्कुराहट और हंसना हमें तरोताजा बने रहने में सहायक होती हैं।

लाभ : आज के समय में जिन्दगी की गति बढ़ गई है। रोजमर्रा के हजारों तनाव है। ऐसे में अगर इंसान हंसी का दामन छोड देगा तो मशीन और इंसान में फर्क करना मुश्किल हो जाएगा। खुशमिजाज व्यक्ति डिप्रेशन जैसी बीमारियों से दूर रहते है। इस तनाव भरी जिंदगी में हृदय पर भी बराबर दबाव बनारहता है। तनाव मुक्त रहनेवाले हंसमुख व्यक्तियों को तनाव के कारण होने वाले दिल के रोग भी कम होते है। संसारभर के वैज्ञानिक इस अनुसंधान में लगे हैं कि मानसिक रोगों से कैसे मुक्ति पाई जाए। उनके अनुसार मुक्त हास्य इस बीमारी का सही इलाज है। चिन्ता शरीर की दुश्मन है और हंसी सौ रोगों की दवा है। हंसने से मन और शरीर दोनों स्वस्थ रहते है। फेफडों को ज्यादा आक्सीजन मिलती है जो स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम है।

सब रोगों की एक दवाई हँसना सीखों मेरे भाई ।

★★★

हिन्दी के माध्यम अंग्रेज़ी सीखें

TENSE - काल

जिस तरह हिन्दी में तीन काल होते हैं उसी प्रकार अंग्रेजी में मुख्यत तीन काल होते हैं।

1) Present Tence वर्तमान काल
2) Past Tence भूतकाल
3) Future Tence भविष्य काल

PRESENT TENSE - वर्तमान काल

वर्तमान काल के वाक्यों से कार्य के अभी हो रहे होने का ज्ञान होता है। जैसे I am reading the book. मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ।

Present Tence के चार भेद होते हैं।

1) Present Indefinite Tense (सामान्य वर्तमान काल) ।
2) Present Continuous Tense (अपूर्ण वर्तमान काल) ।
3) Present Perfect Tense (पूर्ण वर्तमान काल) ।
4) Present Perfect Continuous Tense (पूर्णापूर्ण वर्तमान काल) ।

PRESENT TENSE (सामान्य वर्तमान काल)

नियम - इस काल में, किसी कार्य का वर्तमान काल में होना तथा किसी मनुष्य या व्यक्ति की आदत को प्रकट किया जाता है।

पहचान - क्रिया में 'ता' 'ती' 'ते' प्रकट होते हैं।

बनाने के नियम - (i) यदि कार्य करने वाला कर्त्ता एक वचन में है तो वाक्य में क्रिया की पहली अवस्था (First Form of the Verb) में एस (s) या ई एस (es) का प्रयोग किया जाता हैं। उदाहरण : (a) रीता गाती है - Rita sings, (b) अंजु स्कूल जाती है - Anju goes to school.

(ii) अगर कार्य करने वाला कर्त्ता एक से अधिक है तो वाक्य की पहली अवस्था में s या es का प्रयोग नहीं किया जाता है। उदाहरण : (a) वे घर जाते हैं। They go home. (b) हम उसे प्यार करते हैं। We love him.

(iii) यदि वाक्य प्रश्न वाचक अर्थात क्या, क्यों, कहाँ, तथा कैसे आदि शब्दों से प्रारम्भ हो तो वाक्यों में Do या Does होता है कर्त्ता के अनुसार ।

नियम - यदि कार्य करने वाला कर्त्ता एक वचन है तो "Does" का प्रयोग होता है कर्त्ता से पहले s या es हट जाते है। उदाहरण : (a) क्या नीलू गाती है? Does Nilu sing? (b) क्या रीता स्कूल जाती है? Does Rita go to school?

PRESENT CONTINUOUS TENSE (अपूर्ण वर्तमान काल)

परिभाषा - इस "Tense" में कार्य का अपूर्ण होना पाया जाता है।

पहचान : रही है, रहे है, रहा हूँ, आदि ।

बनाने के लिए नियम :

(i) is, am एवं are के बाद में क्रिया की पहली अवस्था (First form the verb) में "ing" लगा देते हैं । जैसे

Verb	ing का प्रयोग	पूर्ण शब्द
Com	ing	coming
go	ing	going
run	ing	running

ii) अगर कार्य करने वाला एक वचन या एक व्यक्ति है तो प्रथम अवस्था (First form of the verb) से "ing" लगाकर प्रयोग करते है। जैसे

1) वह जा रहा है। He is going.
2) छाया खा रही हैं । Chhaya is eating.
3) बच्चा खेल रहा हैं। The child is playing.

iii) अगर कार्य करने वाला एक से अधिक है तो "are" का प्रयोग करते है। जैसे

1) वे जा रहे हैं । They are going.
2) बच्चे खेल रहे हैं। Children are playing.
3) विद्यार्थी स्कूल जा रहे है ।
The students are going to school.

iv) यदि वाक्य प्रश्न वाचक है तो कर्त्ता के अनुसार is, are, am, में से किसी एक से वाक्य को आरम्भ करते हैं। जैसे

1) क्या वह रो रहा है ? Is he weeping ?
2) क्या वे खेल रहे हैं ? Are they playing.
3) क्या लड़कियाँ गा रही है ? Are the girls singing ?

★★★

हिन्दी भाषा सीखें ।
राष्ट्रीय भावना बढ़ाएँ ।

ज्ञान समाचार

फल-फूल, पैड़-पौधे

प्रश्न : ब्रेड फ्रूट ट्री रोटी का पेड़ कहाँ हैं ?

उत्तर : वेलेजुएला नामक स्थान में पायेजाने वाले ब्रेड फ्रूट नामक पेड़ का फल फुटबाल के आकार का होता है। फल के गूदे में बीज भरे होते है। बीज के पकने से पहले फल गोल गोल चपातियों के रूप में काटकर व सेंक के खाया जाता है ।

वह कौनसा फल है, जिसके ऊपर छिलका व अंदर बीज नहीं होते हैं ? **शहतूत**

गूलर का फूल कहाँ होता है? **फल के भीतर होता है**

सबसे जल्द तैयार होने वाली फसल कौनसी है? **मक्का**

किस फसल को बोने के लिए बीज का प्रयोग नहीं होता? **गन्ना**

सबसे लम्बा वृक्ष कौनसा होता है?
युकेलिप्टस जो लगभग १०० मी. ऊँचा होता है।

आग बरसानेवाला पेड़ कहाँ है? **मलेशिया में**

विश्व में कौनसा पेड़ है जिसमें लकड़ी नहीं होती? **केला**

विश्व का सबसे बड़ा वृक्ष कौनसा है?
शिकाया वृक्ष भार २५०० टन

सबसे पौष्टिक फल कौन सा है? **नाशपाती**

विश्व में कौनसा पौधा है जिसकी शक्ल आदमी से मिलती है और उसे उखाड़ने पर उसमें से बच्चे के रोने की आवाज आती है, वह पौधा कहाँ पाया जाता है? **मैडूक, अफ्रीका में**

सबसे तेज गति से बढ़ने वाला वृक्ष कौनसा होता है? **बाँस**

पौधे का कौनसा भाग सजीव होता है? **तना**

सबसे बड़ा फूल कौन सा होता है?
रफ्लेशिया वजन 10 किलोग्राम

कौन सी फसल तिलहन और दलहन दोनों होती है? **सोयाबीन**

★★★

शारीरिक दुर्बलता

कारण : शारीरिक दुर्बलता के अनेक कारण हो सकते हैं। असाध्य रोग होने पर रोगी को प्रायः शारीरिक दुर्बलता घेर लेती है। इसके अलावा पौष्टिक भोजन का अभाव भी इस रोग का कारण बन जाता है। कभी कभी अत्यधिक परिश्रम करने तथा पूर्ण विश्राम न करने से भी इस रोग की उत्पत्ति हो जाती है। कई बार रक्त की कमी से भी शारीरिक दुर्बलता आ जाती हैं ।

लक्षण : इस रोग में शरीर में दर्द होता हैं। आंखों के आसपास काले धब्बे उभर आते हैं। दिल में बेचैनी रहती है। प्यास अधिक लगती हैं। खाया पिया पदार्थ शरीर मं नहीं लगता। सिर में दर्द रहता है। रक्त की कमी हो जाती हैं। मन में प्रायः निराशा, चिंता तथा तनाव केलक्षण भी दृष्टिगोचर होते हैं।

उपचारः मक्खन निकला मट्ठा में खाण्ड डालकर सेवन करें।

★ आम की बौर लेकर छाया में सुखा लें. फिर उसे पीसकर चूर्ण बनाएँ। इसमें से ३ ग्राम चूर्ण खाकर ऊपर से ेक गिलास मट्ठा पी जाएँ।

★ बबूल का गोंद शुद्ध घी में तलकर पीस डालें। इसके बाद इसमें थोड़ी सी शक्कर मिलाकर रोज सुबह 10 ग्राम चूर्ण एक कप दही या मट्ठे के साथ सेवन करें ।

★ अस्वगंधा नागौरी, शतावर तथा मिश्री - तीनों चीजें बराबर की मात्रा में लेकर कूट पीस कर छान लें। फिर इसमें से ५ ग्राम चूर्ण फांककर ऊपर से एक गिलास दही या मट्ठे का सेवन करें।

★ बिदारीकंद के चूर्ण में शक्कर तथा देशी घी मिलाकर मट्ठे का छाछ के साथ 15 दिनों तक नियमित रूप से लें।

★ मुलहटी का चूर्ण 3 ग्राम खाकर ऊपर से मट्ठे का सेवन करें।

GOOD NEWS TO TEACHERS

సమతా హిందీ ప్రచార విభాగ్ విజయవాడ వారి ప్రోత్సాహక్ హిందీ అనుదాన్ పొందుటకు వారి వారి పేర్లను ప్రతిమండలంనుండి, పాఠశాలలలో పనిచేయుచున్న ఉపాధ్యాయనీ, ఉపాధ్యాయులు వారి వారి పేర్లను రిజిష్టర్ చేసుకొనగలరు. ప్రతి నెలా 500/-ల నుండి 4,000/-ల వరకు అనుదాన్ అందజేయబడును.

జిల్లాలోని అన్ని మండలముల నుండి **రీజనల్ ఆర్గనైజర్స్‌గా** పనిచేయుటకు (పార్ట్‌టైమ్) ఆసక్తిగల ఉపాధ్యాయునీ, ఉపాధ్యాయులు, పూర్తి బయోడేటా, రెండు పాస్‌పోర్ట్ సైజు ఫొటోలతో వెంటనే దరఖాస్తు చేసుకొనగలరు.

SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG
Gunadala, VIJAYAWADA-4.
Ph : 0866-2451611, 98483 52011.

हँसी के फूल

★ बस में पति देव भीड़ केकारण एक युवती से सटकर खड़े थे और यह देखकर पत्नी जल रही थी। अचानक युवती घूमी और पति के गाल पर चाँटा मारा। देख पराई स्त्री को चुटकी काटने का नतीजा। बस से उतरते ही वह पत्नीको सफाई देने लगा, मैंने उसे नहीं चूंटा था ।

पत्नी मजा लेकर बोली - कोई बात नहीं असल में मंने उसे चूंटा था, तुम्हें सबक सिखाने के लिए ।

★★★

★ एक चित्रकार एक किसान की झोपड़ी का चित्र बना रहा था। किसान ने पूछा कि इस चित्र का तुम क्या करोगे ?

मैं इसे प्रदर्शनी में भेजूँगा, वहाँ इसे हजारों आदमी देखेंगे। तो भैया इस पर यह भी लिख दो कि किराये के लिए खाली हैं।

★★★

★ नवीन (नाकु से) - नाकु, जब मैं जंगल में अकेला जा रहा था तो मुझे डाकू मिले। वह मेरी घड़ी, कार और रुपया सब कुछ ले गए ।

नाकु : लेकिन तुम्हारे पास तो पिस्तौल थी न ।

नवीन : हाँ थी तो । लेकिन पिस्तौल पर उसकी नजर ही नहीं पड़ी ।

★★★

★ अध्यापक (लड़के के पिता से) - श्रीमान जी यह आपका लड़का कक्षा में सबसे कमजोर है ।

पिता - भगवान की दया से घर में दो दो गया हैं। दूध घी की कमी नहीं। फिर भी मालूम नहीं कि यह कमजोर क्यों है?

★★★

कप्तान - तुम वहाँ से भागकर क्यों आ गए? तुम्हारे पास तो राइफल था ।

जवान - भागता नहीं तो और क्या करता सामने वाले के पास मशीन गन जो था ।

★★★

शादी के एक साल बाद एक सखी दूसरी सखी से बोली तुम्हारे मजे हैं घर जवाँई पति को तुम पूरी तरह काबू में रख सकती हो।

दूसरी सखी : अरे कहाँ, उलटा वह मुझपर रौब गाढते रहते हैं।

पहली सखी : वह कैसे ?

दूसरी सखी : बात बात में मायके चले जाने की धमकी देते हैं।

यादगार नग़मे

*फिल्म : **धरम करम** गायक : **किशोर***

*गीत : **मजरूह सुल्तानपुरी** संगीत : **आर.डी. बर्मन***

एक दिन बिक जायेगा माटी के मोल
जग मे रह जायेंगे प्यारे तेरे बोल
दूजे के होठों को देकर अपने गीत
कोई निशानी दे फिर दुनिया से डोल
एक दिन बिक जायेगा माटी के मोल
जग मे रह जायेंगे प्यारे तेरे बोल

अनहोनी पथ में काटे लाख बिछाए
होनी तो फिर भी बिछड़ा यार मिलाए
ये बिरहा ये दूरी दो पल की मजबूरी
पि- कोई दिल वाला काहें को घबराए
तरम-पम धारा जो बहती है मिलके रहती है
बहती धारा बन जा फिर दुनिया से डोल
एक दिन ....

परदे के पीछे बैठी सांवली गोरी
थाम के वो तेरे मन की डोरी
ये डोरी ना छूटे ये बन्धन न टूटे
भोर होने वाली है अब रैना है थोड़ी
तरम-पम सर को झुकाए तू बैठा क्या है याह
गोरी से नैना जोड़ फिर दुनिया से डोल
एक दिन ....

GOOD NEWS TO TEACHERS

All the teachers are requested (KARNATAKA & ANDHRA PRADESH) to the register their names for **PROTSAHAK MONTHLY ANUDAAN** Rs. 500/- to Rs. 4,000/- from Samata Hindi Prachar Vibhag, Vijayawada.

❀❀❀❀

Applications can be invited from the Degree Candidates for the post of **DISTRICT ORGANISERS.**

❀❀❀❀

Apply with full biodata & 2 passport size photos immediately. Salary : 4,000/-+. (Part Time)

SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG
Gunadala, VIJAYAWADA-4.
Ph : 0866-2451611, 98483 52011.

स्वतन्त्रता दिवस

आजाद भारतवर्ष का इतिहास 15 आगस्त, 1947 से प्रारम्भ हुआ जिस दिन हमारे देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति मिली। राष्ट्र को अनेकानेक कष्टों एवं दुखों के बीच गुजरना पड़ा था। इतने अधिक शहीदों ने अपने जीवन का बलिदान दिया था और इतने अधिक लोगों को जेल की कोठरियों में घुटना पड़ा था कि उनकी गणना सम्भव नहीं ।

भारत को स्वतन्त्रता तो मिल गई किन्तु दो हिस्सों में देश का विभाजन हो गया एक का नाम भारतवर्ष ही रहा, किन्तु दूसरे का नाम पाकिस्तान पड़ा। देश का बहुत बड़ा हिस्सा, जो देश के दोनों सिरों पर स्थित था, पाकिस्तान में चला गया। पूर्वी हिस्सा पूर्वी पाकिस्तान कहलाया और पश्चिमी हिस्सा पश्चिमी पाकिस्तान। लाखों शरणार्थी अपना घर बार छोड़कर भारत भाग आए ।

किन्तु प्रत्येक राष्ट्र को आजादी प्राप्त करने के लिए बहुत बलिदान देने पड़ते है। मातृभूमि की आजादी से बढ़कर कोई भी दूसरी वस्तु अधिक मूल्यवान नहीं । देश का पहला स्वतन्त्रता दिवस 15 आगस्त, 1947 को मनाया गया। उस दिन पंडित जवहरलाल नेहरु ने लाल किले पर राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहराया था । तब से प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को देश में स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता है। उस दिन सभी बड़े शहरों में समारोह आयोजित होते हैं। दिल्ली में प्रधानमंत्रीजी लाल किले पर तिरंगा झण्डा फहराते हैं और राष्ट्र के नाम सन्देश प्रसारित करते हैं ।

सेना लाल किले की ओर बढ़ती है तथा असंख्य दर्शक प्रतिवर्ष इस उत्सव को देखते हैं। अन्य बड़े शहरों में सभी सरकारी भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता हैं। कभी कभी ध्वजारोहण के लिए मंत्रियों या उच्च अधिकारियों को आमंत्रित किया जाता हैं।

इस समारोह का आयोजन सभी स्कूलों और कालेजों में होता हैं। वहाँ प्रदानाचार्य हजारों विद्यार्थियों और अध्यापकों की उपस्थिति में ध्वाजारोहण करते हैं और ध्वजारोहण के समय आस पास का वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठता हैं।

कहीं कहीं पर स्कूलों और कालेजों में नाटकों का आयोजन भी किया जाता है और उनके माध्यम से स्वतन्त्रता आन्दोलन के दृश्यों को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। विद्यार्थी अधिक से अधिक संख्या में इस समारोह में हिस्सा लेते हैं और राष्ट्रीय नेताओं के सन्देश उपस्थित समूह के समक्ष पढ़कर सुनाए जाते हैं। कई स्थानों पर जिले के मुख्यालयों में यह

INDEPENDENCE DAY

The history or free and independent India started from the 15th of August, 1947 when our country won freedom from the unwilling hands of the Britishers. The nation had passed through tears and troubles. So many martyrs had laid down their lives and so many people were imprisoned that one can hardly count their number.

India got freedom, but the country was partitioned into two - India and Pakistan. A sizeable part of the country was formed into Pakistan that was located on either side of our country. The Eastern part was called East Pakistan and the Western part was called the Western Pakistan. Millions of refugees started trecking to India and left their hearths and homes.

But every nation has to make a great sacrifice for attaining freedom. No price is too great for freedom of the motherland.

The first Independence Day was celebrated on the 15th of August, 1947, when Pt. Jawaharlal Nehru had unfurled the Indian National Flag on the Red Fort.

Since then the Independence Day is celebrated every year in our country on the 15th of August. On this day in every big city the celebrations are held. In Delhi our Prime Minister hoists National Flag on the Red Fort and delivers his message to the nation.

The Army moves to the Red Fort and there are countless spectators who watch this celebration every year. In the big cities, on all the Government buildings, the national flags are hoisted. Sometimes the Ministers or the highest officials unfurl the national flag.

This occasion is celebrated in all the schools and colleges. The Principal of the institution hoists the national flag in the midst of thousands of students and teachers. As soon as the flag is hoisted, there is clapping.

This occasion is celebrated in the schools and colleges in the form of staging dramas about how our country was able to wrest freedom from unwilling hands of the foreigners. The students join in the celebrations in large numbers. The messages are sent whiff are read out before the gatherings. At night in the District Headquarters throughout, these festivities are held in the big stadium or playgrounds. These celebrations attract large number of people, who

उत्सव रात्रि में विशाल खेल मैदानों या सार्वजनिक स्थलों पर भी मनाया जाता है और लाखों की संख्या में उपस्थित दर्शक उसे देखते हैं। कहीं कहीं पटाखे और फुलझड़ियां भी छोड़ी जाती हैं व सरकारी भवनोंको रोशनी से सजाया जाता हैं।

स्वतन्त्रता दिवस हमारे देशवासियों को उन महान् बलिदानियों की स्मृति को सुरक्षित रखने की प्रेरणा देता है जिन्होंने हंसते हंसते अपने प्राणों का बलिदान राष्ट्र के लिए कर दिया था। सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद तथा अनेकानेक महान क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। कुछ कस्बों और गाँवों में सभाओं का आयोजन किया जाता है और राष्ट्रीय शहीदों के महान त्याग और बलिदान की गाथाएँ लोगों को सुनाई जाती हैं।

इस वर्ष मुझे भी अपने महाविद्यालय का स्वतन्त्रता दिवस समारोह एवं झण्डारोहण देखनेका सुअवसर मिला। प्रधानाचर्य महोदय ने झंडारोहण के पश्चात एक संक्षिप्त भाषण दिया तथा लोगों को अमर शहीदों की त्याग एवं संघर्ष से पूर्ण गाथाएँ सुनाई व मातृभूमि की आजादी का महत्व बताया। मुझे दिल्ली में लाल किले के स्वतन्त्रता दिवस समारोह को भी देखने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। इन आयोजनों को देखकर मुझे बहुत गहरी प्रेरणा मिलती है। मैं अपने देश को बहुत प्यार करता हूँ और कामना करता हूँ कि आजन्म देश सेवा में रत रहूँ। ★★★

watch these celebrations in zest and perfect joy. Sometimes we witness fire-works at night. The Government buildings are well lit-up for the night.

Independence Day inspires our nation to remember those who laid down their lives cheerfully for the cause of the nation. Subhash Chandra Bose, Sardar Bhagat Singh and Chandra Shekhar Azad and many other revolutionaries laid down their lives. In some cities and villages, meetings are held to remind the people of the great sacrifices made by the martyrs for the cause of freedom.

This year I witnessed the Independence Day celebration in my college, where the national flag was hoisted. The Principal made a brief speech and he told of the sufferings of the martyrs for the cause of freedom of the motherland and stressed upon the importance of freedom. I am fortunate enough to see such a celebration at Red Fort also. I feel deeply inspired to watch these celebrations.

I love my country and wish to serve her to the last breath of my life. ★★★

ARE 'U' PLANNING FOR ONE DAY PICNIC?

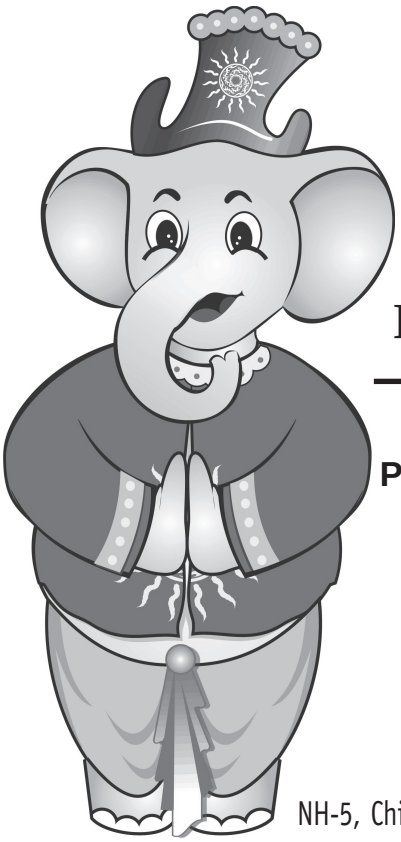

Entry Fee : Rs. ~~300~~/-

Special Student Package for Schools

Rs. 250/-

Park Entry + Water Riders + Mechanical Riders +

Lunch + Surprising Gift for Every Student

Rush for Booking

For Teacher Group Functions & Management Events

Please Contact : Cell : 92485 13905, 92485 13906

Haailand

RESORT & THEME PARK

NH-5, Chinakakani, NearNRI Hospital, Mangalagiri Mandal, Guntur Dt.-522033. A.P. India

भारतीय समता हिन्दी प्रचार परिषद्

समता हिन्दी प्रचार विभाग

Central Office : Gunadala, VIJAYAWADA - 520 004.

(Regd. by the Govt. of India)

NATIONAL HINDI TEST 20.....
NOMINAL ROLL LIST

V	VI	VII	VIII	IX	X	Total

Name of the School & Complete Address .....

.....

Name of the Hindi Teacher ..... Place..... Dist.....

S. No.	Name of the Student	Name of the Father	Class	Hall Ticket No.	Marks	Atten-dance

BHARATIYA SAMATA HINDI PRACHAR PARISHAD

कार्यनिर्वाहक आवेदन पत्र

SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG

(Regd. by the Govt. of India)
Central Office Buildings, Opp. Boarding, Gunadala, VIJAYAWADA-520 004.
Ph : (0866) 2451611, 2440112 Mobile : 09848352011. e-mail : samatahindi@yahoo.com

Photo

P.H. Convenor Regd. No. : _____ Mandal Convenor Regd. No. : _____

PLEASE FILL IN THE APPLICATION FORM COMPLETE IN BLOCK LETTERS

Hindi Teacher's Name _____ **Date of Birth** _____

Name (Father/Spouse) Mr./Mrs. _____

School Name _____

School Address _____

_____ **School Ph. No.** _____

Hindi Teacher House Address _____

_____ **Pin :** _____

Names of the Children of Hindi Teacher **2. Date of Birth :** **Class :**

1. _____ _____ _____

2. _____ _____ _____

Teacher Ph.No. (Res) _____

Regd. for the Month _____ **Date** _____

Hindi Teacher Signature _____

भारतीय समता हिन्दी प्रचार परिषद् विजयवाडा - 4.

ORDER FORM

ESTD : 1989

SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG
(Registered by the Govt. of India, Regd. Act No. 389 of 1994)
Central Office Buildings, Gunadala, VIJAYAWADA - 520 004.

Phone : 0866 - 2451611

Sir,

We request to to supply the following books for our school students (NHT) an amount (Exam fee) of Rs. ..... (Rs. .....) D.D. No. ..... in favour of "SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG" Andhra Bank, Gundadala, Vijayawada Branch is here with enclosed.

1. V Class _____
2. VI Class _____
3. VII Class _____
4. VIII Class _____
5. IX Class _____
6. X Class _____

Total _____

NAME OF THE SCHOOL ADDRESS :

_____

_____

_____

Please fill the complete addresses of your area schools and approximate strength to Distribution of Hindi Books free of cost to the students.

SCHOOL NAME _____
ADDRESS _____
_____
_____ PIN ☐☐☐☐☐☐
TEL. _____

5th-	6th-	7th-	8th-	9th-	10th-

SCHOOL NAME _____
ADDRESS _____
_____
_____ PIN ☐☐☐☐☐☐
TEL. _____

5th-	6th-	7th-	8th-	9th-	10th-